Ameere Ahle Sunnat Se Namaze Witr Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 243
Weekly Booklet : 243

अमीरे अहले सुन्नत से नमाज़े वित्र के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 18

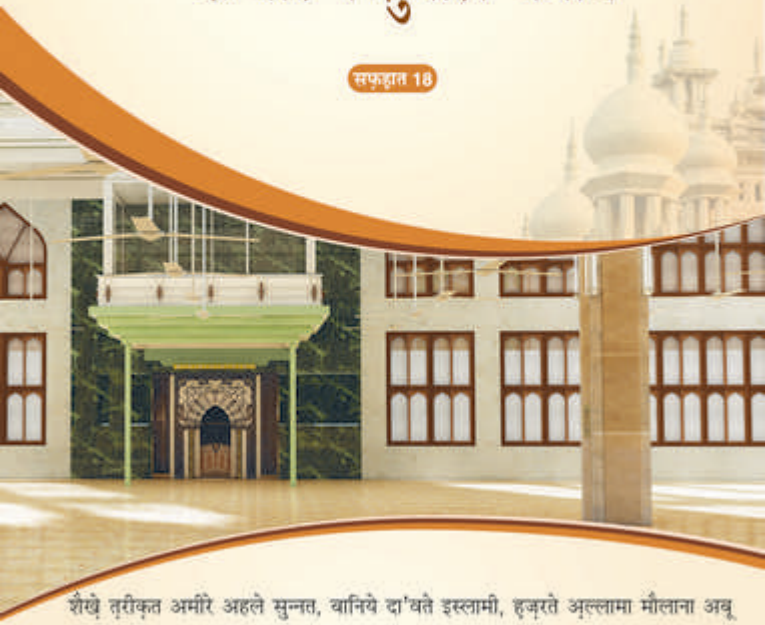

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से नमाज़े वित्र के बारे में सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से नमाज़े वित्र के बारे में सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात.

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

अमीरे अहले सुन्नत से नमाज़े वित्र के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला : "**अमीरे अहले सुन्नत से नमाज़े वित्र के बारे में सुवाल जवाब**" पढ़ या सुन ले उसे बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुआए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (दुआए) "कुनूत" में **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते थे। (فضل الصلاۃ علی النبی للقاضی الجہضمی، ص87، رقم:107) "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 655 पर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (नमाज़े वित्र की तीसरी रक्अ़त में) दुआए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : नमाज़ों में हम वक़्त की निय्यत करते हैं, मसलन फ़ज्र में फ़ज्र के वक़्त की, ज़ोह्र में ज़ोह्र के वक़्त की तो नमाज़े वित्र अदा करते वक़्त

किस वक़्त की निय्यत करें ?

जवाब : तीन रक्अ़त वित्र वाजिब की ही निय्यत करेंगे, वक़्ते इ़शा बोलना शर्त़ नहीं है क्यूं कि यक़ीनी बात है कि नमाज़े वित्र इ़शा में ही होती है नीज़ दिल में निय्यत होना काफ़ी है, ज़बान से कहना भी ज़रूरी नहीं, अलबत्ता ज़बान से कह लेना मुस्तह़ब है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 156)

सुवाल : क्या वित्र की तीसरी रक्अ़त की तक्बीर से पहले हाथ नीचे लटकाना ज़रूरी है ?

जवाब : वित्र की तीसरी रक्अ़त की तक्बीर को तक्बीरे क़ुनूत कहते हैं और येह वाजिब है (बहारे शरीअ़त, 1/518, ह़िस्सा : 3) और इस के लिये ख़ुसूसी त़ौर पर हाथ लटकाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि जैसे ही सूरए फ़ातिह़ा और कोई दूसरी सूरत पढ़ लें तो अब हाथ उठा कर اَللّٰہُ اَکْبَر कह लें और फिर हाथ बांध लें। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/469)

सुवाल : अगर वित्र में तक्बीरे क़ुनूत (या'नी दुआ़ए क़ुनूत के लिये कही जाने वाली तक्बीर) कहना भूल गए तो क्या सज्दए सह्व लाज़िम होगा ?

जवाब : तक्बीरे क़ुनूत वाजिब है, अगर वाजिब भूले से रह गया तो सज्दए सह्व लाज़िम है। (درمختار مع ردالمحتار، 2/200) अगर जान बूझ कर तक्बीर नहीं कही या मस्अला मा'लूम नहीं था तो नमाज़ लौटाना वाजिब है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 156)

सुवाल : क्या वित्र में दुआ़ए क़ुनूत की जगह कुछ और पढ़ सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! अगर दुआ़ए क़ुनूत नहीं आती तो इस की जगह "رَبِّ اغْفِرْلِیْ" या "اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ" कह लीजिये और अगर येह कहना

भी नहीं आता तो "یَارَبِّیْ" तीन मरतबा कह लीजिये।

(फ़तावा रज़विय्या, 8/158) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/477)

सुवाल : अगर कोई नमाज़े वित्र में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना भूल जाए तो क्या उस की नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब : दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना वाजिब था, अगर भूल गया तो सज्दए सह्व कर ले, नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी। (درمختار، 2/538-540 ملخصا)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/378)

सुवाल : वित्र की तीसरी रक्अ़त में तक्बीरे क़ुनूत के वक़्त हाथ उठाने की क्या वज्ह है ?

जवाब : (क्यूं कि) शरीअ़त में इस का हुक्म है। नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त तक्बीरे तह़रीमा में भी तो हाथ उठाते हैं, नमाज़े वित्र का जो त़रीक़ा शरीअ़त ने बयान किया है उस की तीसरी रक्अ़त में तक्बीरे क़ुनूत है और येह कहना वाजिब है (فتاوی ہندیہ، 1/72, बहारे शरीअ़त, 1/518, ह़िस्सा : 3) लेकिन हाथ उठाना सुन्नत है। (درمختار مع ردالمحتار، 2/200, बहारे शरीअ़त, 1/521, ह़िस्सा : 3) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/209)

सुवाल : हम वित्र की तीसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ने से पहले सूरए इख़्लास पढ़ते हैं, येह इर्शाद फ़रमाइये कि क्या सूरए इख़्लास के इलावा कोई और सूरत भी पढ़ सकते हैं ?

जवाब : वित्र की तीसरी रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए इख़्लास पढ़नी ही ज़रूरी नहीं। दूसरी कोई भी सूरत पढ़ सकते हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/442)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सुवाल : अगर इमाम वित्र की नमाज़ पढ़ाते हुए तक्बीरे क़ुनूत कहे और मुक़्तदी रुकूअ़ में चले जाएं तो क्या रुकूअ़ से वापस आ कर दुआ़ए क़ुनूत पढ़ सकते हैं क्यूं कि इन्फ़िरादी त़ौर पर वित्र पढ़ने में ऐसा हो तो रुकूअ़ से वापस आ कर क़ुनूत पढ़ने की इजाज़त नहीं होती ? (रीकॉर्ड शुदा सुवाल)

जवाब : इमाम की पैरवी वाजिब है, "जो चीज़ें फ़र्ज़ व वाजिब हैं मुक़्तदी पर वाजिब है कि इमाम के साथ उन्हें अदा करे।" (बहारे शरीअ़त, 1/519, ह़िस्सा : 3) लिहाज़ा मुक़्तदी रुकूअ़ में चला गया हो तो वापस आ जाए और इमाम के साथ दुआ़ए क़ुनूत पढ़े।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/436)

सुवाल : कोई शख़्स वित्र की दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा और तीसरी रक्अ़त में इमाम के साथ दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो क्या वोह अपनी तीसरी रक्अ़त में दोबारा दुआ़ए क़ुनूत पढ़ेगा ?

जवाब : दूसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो तीसरी रक्अ़त में दोबारा पढ़ने की ह़ाजत नहीं, तीसरी रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा और कोई सूरत मिला कर नमाज़ मुकम्मल कर ले।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 156)

सुवाल : इमाम के पीछे अगर वित्र के पहले क़ा'दे में भूल कर अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया तो क्या वित्र दोबारा पढ़ने होंगे ?

जवाब : मुक़्तदी वित्र की नमाज़ में इमाम के पीछे जान बूझ कर पहले क़ा'दे में अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ न पढ़े। अलबत्ता बे ख़याली में पढ़ लिया तो इस में कोई ह़रज नहीं। (غنیۃ المستملی، ص421)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/497)

सुवाल : नमाज़े तरावीह़ से पहले नमाज़े वित्र पढ़ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : पढ़ तो सकते हैं मगर बेहतर येही है कि पहले तरावीह़ पढ़ें। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/230) (در مختار مع رد المحتار، 2/597)

सुवाल : कुछ लोग इ़शा के चार फ़र्ज़, दो सुन्नत, दो नफ़्ल और तीन वित्र पढ़ते हैं और बाक़ी छोड़ देते हैं, ऐसा करना कैसा ?

जवाब : इ़शा की नमाज़ में चार फ़र्ज़, उस के बा'द की दो सुन्नते मुअक्कदा और तीन वित्र पढ़ना ज़रूरी हैं। (हमारा इस्लाम, स. 26) इस के इ़लावा फ़र्ज़ से पहले की चार रक्अ़त सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा, दो सुन्नत के बा'द दो नफ़्ल और वित्र के बा'द दो नफ़्ल भी पढ़ने चाहिएं, सवाब मिलेगा। अलबत्ता अगर कोई नहीं पढ़ता तो वोह गुनाहगार नहीं होगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/382) (در مختار مع رد المحتار، 2/545)

सुवाल : क़ज़ाए उ़म्री किन नमाज़ों की होती है ?

जवाब : क़ज़ाए उ़म्री सिर्फ़ फ़र्ज़ और वित्र की होती है एक दिन की 20 रक्अ़तें बनती हैं : दो फ़र्ज़ नमाज़े फ़ज्र के, चार फ़र्ज़ नमाज़े ज़ोह्र के, चार फ़र्ज़ नमाज़े अ़स्र के, तीन फ़र्ज़ नमाज़े मग़रिब के, चार फ़र्ज़ नमाज़े इ़शा के और तीन वित्र। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 125) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/274) सुन्नत और नफ़्ल की क़ज़ा नहीं है। (در مختار مع رد المحتار، 2/633 ماخوذا) अलबत्ता अगर फ़ज्र की क़ज़ा उसी दिन निस्फ़ुन्नहारे शर्ई से पहले की तो सुन्नते फ़ज्र अदा करना मुस्तह़ब है वरना सिर्फ़ फ़र्ज़ ही अदा करे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/274)

सुवाल : क्या इ़शा के फ़र्ज़ और वित्र की क़ज़ा अलग अलग की जा

सकती है ?

जवाब : जैसे सुब्ह़ इशा के फ़र्ज़ पढ़े और शाम को वित्र पढ़ लिये इस त़रह़ अदाएगी हो तो जाएगी लेकिन कोशिश येही होनी चाहिये कि क़ज़ा नमाज़ जल्द अज़ जल्द अदा कर ली जाए । हां ! अगर कोई साह़िबे तरतीब है तो उस को अगली नमाज़ पढ़ने से पहले पिछली नमाज़ पढ़ना होगी । (बहारे शरीअ़त, 1/703, ह़िस्सा : 4 माख़ूज़न) जैसे अगर किसी की नमाज़े इशा क़ज़ा हो गई और उस पर छे नमाज़ों से कम नमाज़ें क़ज़ा हैं तो उस पर फ़र्ज़ है कि येह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने से पहले क़ज़ा नमाज़ें अदा कर ले अगर येह क़ज़ा पढ़ने से पहले फ़ज्र पढ़ेगा तो फ़ज्र नहीं होगी । अलबत्ता फ़ज्र का वक़्त इतना तंग रह गया कि अगर क़ज़ा पढ़ने खड़ा होगा वक़्त निकल जाएगा तो फ़ज्र ही पढ़े कि इस सूरत में फ़ज्र पढ़ने में कोई ह़रज नहीं उस की फ़ज्र अदा हो जाएगी । (बहारे शरीअ़त, 1/703, ह़िस्सा : 4 माख़ूज़न) मगर वोह क़ज़ाएं अब भी ज़िम्मे पर बाक़ी रहेंगी । अगर किसी की छे नमाज़ों से ज़ियादा नमाज़ें क़ज़ा हैं या'नी छटी नमाज़ का वक़्त भी निकल चुका है तो येह अब साह़िबे तरतीब न रहा अब इस के लिये इजाज़त है चाहे उस वक़्त की नमाज़ पहले पढ़ ले या ज़िन्दगी की कोई क़ज़ा नमाज़ पहले पढ़ ले । (बहारे शरीअ़त, 1/705, ह़िस्सा : 4 माख़ूज़न) जिन पर कई नमाज़ें क़ज़ा हैं वोह Confused न हों कि हमारी कोई नमाज़ होती ही नहीं ऐसा नहीं है । अगर वोह साह़िबे तरतीब नहीं हैं तो अपनी वक़्ती नमाज़ों के साथ साथ क़ज़ा भी पढ़ते रहें कि उन क़ज़ा नमाज़ों को जल्द अज़ जल्द अदा करना वाजिब है लिहाज़ा खाने पीने और रोज़गार

कमाने के इलावा जो वक़्त बचे उस में तमाम नमाज़ें पढ़ लें।[1]

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/437)

सुवाल : कोई शख़्स नापाक हो और उसे याद न रहे कि वोह नापाक है और उसी हालत में नमाज़ें पढ़ ले तो उन नमाज़ों का क्या हुक्म होगा ?

(SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : नापाकी या'नी बे गुस्ल होने की हालत में पढ़ी गई नमाज़ें हुई ही नहीं इन को फिर से पढ़ना ज़रूरी है। (बहारे शरीअ़त, 1/282, हिस्सा : 2 माख़ूज़न) अगर वक़्त निकल चुका है तो फ़र्ज़ों की क़ज़ा करे और वित्र में ऐसा हुवा है तो उन की भी क़ज़ा करे।[2]

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/274)

सुवाल : मालिक (या'नी सेठ) कहता है कि सिर्फ़ नमाज़ के फ़र्ज़ पढ़ कर दोबारा काम शुरूअ़ कर दो। अगर मैं इस की बात नहीं मानता और पूरी नमाज़ पढ़ कर काम शुरूअ़ करता हूं तो क्या मेरी नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब : जब फ़र्ज़ अदा कर लिये तो नमाज़ हो जाएगी लेकिन सुन्नते मुअक्कदा भी तर्क न की जाएं क्यूं कि इन्हें अदा करने की भी ताकीद है। वित्र भी चूंकि वाजिब हैं लिहाज़ा वित्र भी पढ़े जाएं। अलबत्ता अगर सेठ

1... क़ज़ा नमाज़ों की आसान अदाएगी के बारे में मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा पढ़िये, या दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم मा'लूमात में इज़ाफ़ा होने के साथ साथ क़ज़ा नमाज़ों के अहम शरई मसाइल का इल्म हासिल होगा।

2... आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (सुन्नते फ़ज्र) अगर मअ़ फ़र्ज़ क़ज़ा हुई हों तो ज़ह़वए कुब्रा आने तक इन की क़ज़ा है इस के बा'द नहीं और अगर फ़र्ज़ पढ़ लिये सुन्नतें रह गई हैं तो बा'दे बुलन्दिये आफ़्ताब इन का पढ़ लेना मुस्तह़ब है क़ब्ले तुलूअ़ रवा (या'नी जाइज़) नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 8/145)

नफ़्ल पढ़ने से मन्अ़ करता है तो अब नफ़्ल न पढ़े जाएं। (बहारे शरीअ़त, 3/161, हिस्सा : 14 माख़ूज़न) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/36)

सुवाल : अगर तरावीह़ पढ़ना भूल जाएं तो वित्र के बा'द तरावीह़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब : वित्र के बा'द तरावीह़ पढ़ने में कोई ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1/689, हिस्सा : 4 माख़ूज़न) (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, अप्रील 2021)

सुवाल : औ़रतों का तख़्त पर नमाज़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : औ़रत हो या मर्द, तख़्त पर नमाज़ पढ़ने में कोई ह़रज नहीं है जब कि सज्दा दुरुस्त त़रीक़े से किया जाए।[1] अलबत्ता बा'ज़ औ़रतें जब तख़्त पर नमाज़ पढ़ती हैं तो बैठ कर पढ़ती हैं, तो अगर फ़र्ज़ नमाज़ है या फ़ज्र की सुन्नतें या वित्र हैं तो उन्हें बिग़ैर शर्ई इजाज़त के बैठ कर पढ़ना जाइज़ नहीं, क्यूं कि इन नमाज़ों में क़ियाम फ़र्ज़ है। (تنویر الابصار، 2/584) (در مختار مع رد المحتار، 2/163) हां ! नफ़्ल बैठ कर पढ़े जा सकते हैं। लेकिन इस सूरत में आधा सवाब मिलेगा (जब कि बिला उ़ज़्र बैठ कर पढ़े)। (مسلم، ص289، حدیث:1715) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/563)

दुआ़ए क़ुनूत में बुरी सोह़बत से बचने का बयान

सुवाल : बुरी सोह़बत से कैसे बचा जा सकता है ? (ह़स्सान नसीम अ़त्तारी, Facebook के ज़रीए़ सुवाल)

जवाब : किसी चीज़ को पाने के लिये कुछ न कुछ गंवाना पड़ता है। बुरी सोह़बत में चूंकि लज़्ज़त बहुत होती है, इस लिये उसे छोड़ने में थोड़ी

1... किसी नर्म चीज़ मसलन घास, रूई, क़ालीन वग़ैरहा पर सज्दा किया तो अगर पेशानी जम गई या'नी इतनी दबी कि अब दबाने से न दबे तो जाइज़ है, वरना नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1/514, हिस्सा : 3)

तक्लीफ़ होगी, लेकिन उस के नुक़्सानात पर ग़ौर करना चाहिये कि बुरी सोहबत ऐसी ख़तरनाक होती है कि ईमान भी बरबाद कर सकती है। हज़रते मौलाना जलालुद्दीन रूमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

تا توانی دُور شو از یارِ بَد   مارِ بد تنہا ہمیں بر جاں زَنَد
یارِ بد بدتر بُوَد از مارِ بد   یارِ بد بَر دِین و بَر ایماں زَنَد

(मस्नवी मौलाना रूम)

"या'नी जहां तक हो सके बुरे दोस्त से दूर रहो कि बुरा दोस्त सांप से भी ज़ियादा नुक़्सान देह होता है। सांप तो सिर्फ़ जान लेता है जब कि बुरा यार ईमान लेता है।" आज कल दोस्तों की बैठक में ग़ीबत, चुग़्लियां और दीगर गुनाहों के साथ साथ نَعُوْذُبِاللہ कुफ़्रिय्यात भी चल रहे होते हैं, यूं बुरी सोहबतों में ईमान ज़ाएअ़ होने का ख़त़रा है। मक्के के काफ़िर उ़क़्बा बिन अबू मुईत़ का वाक़िआ़ है कि येह ईमान ले आया था, लेकिन फिर उस के दोस्त ने उसे त़ा'ना दिया और Convince (या'नी आमादा) किया तो वोह मुरतद हो गया, (تفسیر خازن، پ19، الفرقان، تحت الآیۃ:27، 3/371) क़ुरआने करीम ने उस का वोह क़ौल नक़्ल किया है जो वोह क़ियामत के दिन अफ़्सोस के साथ कहेगा : "﴿يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۝۲۸﴾ (پ19،الفرقان:28) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** वाए ख़राबी मेरी हाए किसी त़रह़ मैं ने फुलाने को दोस्त न बनाया होता।" बुरा दोस्त ईमान ले सकता है और अगर ईमान नहीं लेता तो बुराइयों में ज़रूर डाल देता है। अकेला आदमी आ़म तौ़र पर गुनाह कम करता है, लेकिन जब बुरा दोस्त मिलता है तो ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है और गुनाहों की Planning (या'नी मन्सूबा बन्दी) शुरूअ़ हो जाती है, इस लिये अच्छा दोस्त तन्हाई से बेहतर

है और बुरे दोस्त से तन्हाई अच्छी है। दोस्त ऐसा होना चाहिये जिसे देख कर ख़ुदा याद आ जाए, उस की बातों से नेकियों और अ़मल में इज़ाफ़ा हो, उस की गुफ़्तगू से **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़, आख़िरत का डर और जन्नत का शौक़ पैदा हो और वोह जहन्नम के अ़ज़ाब से डराए। इस के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहिये, क्यूं कि येह अच्छी सोह़बत है। जब हम वित्र की नमाज़ पढ़ते हैं तो उस में येह भी पढ़ते हैं : ''وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ'' या'नी **या अल्लाह !** मैं तेरे फ़ाजिर (या'नी ना फ़रमान) बन्दे को छोड़ता हूं। गोया बन्दा **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़ह्द और वा'दा कर रहा है कि ''मैं तेरे ना फ़रमान बन्दे को छोड़ता हूं'' लेकिन सलाम फेरते ही ना फ़रमान बन्दे की सोह़बत में जा कर बैठ जाता है। **अल्लाह** पाक हम सब को बुरी सोह़बत से बचाए और अच्छी सोह़बत नसीब फ़रमाए। मक्तबतुल मदीना की किताबों का मुत़ालआ़ भी अच्छी सोह़बत है, क्यूं कि इस से बहुत कुछ सीखने को मिलता है और बन्दा गुनाहों से बच जाता है।

सोशल मीडिया की सोह़बत ख़त़रनाक है। येह भी बा'ज़ अवक़ात ईमान को ग़ारत कर देती होगी और इस का पता भी नहीं चलता होगा, क्यूं कि सोशल मीडिया पर भी एक से एक कुफ़्रिय्या Dialogues (या'नी जुम्ले) बोले जाते होंगे और त़रह़ त़रह़ की वाहिय्यात बातें बकते होंगे। इस लिये सोशल मीडिया का User (या'नी इस्ति'माल करने वाला) ख़त़रे से दो चार रहता है। सोशल मीडिया पर हर त़रह़ का क्लिप Viral (या'नी आ़म) हो रहा होता है। येह जो मक़ूला है कि ''सुनो सब की, करो अपनी'' क़ुरआनो ह़दीस के ख़िलाफ़ है और ग़लत़ है। शरीअ़त ने सब की मसलन

बद मज़हब की सुनने से मन्अ़ किया है, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "तौरात शरीफ़" के अवराक़ पढ़ने से मन्अ़ कर दिया था और फ़रमाया था कि मूसा عَلَیْہِ السَّلَام भी इस वक़्त होते तो उन्हें भी मेरी पैरवी किये बिग़ैर कोई चारा न होता। (مشکاۃ المصابیح، 1/57، حدیث:194) तौरात शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ जिन में ख़ुर्द बुर्द नहीं हुई वोह बेशक **अल्लाह** पाक का कलाम हैं और उसी की त़रफ़ से नाज़िल कर्दा हैं, उन के एक एक ह़र्फ़ पर हमारा ईमान है। (تفسیر خازن، پ 3، البقرۃ، تحت الآیۃ: 285، 1/225) लेकिन अब चूंकि उन के अह़कामात मन्सूख़ हो चुके हैं और उन में तब्दीली भी हो चुकी है, इस लिये अब अगर कोई उन्हें पढ़ेगा तो Confuse हो (या'नी उलझ) जाएगा, इस लिये उन को पढ़ने की इजाज़त नहीं है। ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बहुत बड़े आ़लिम थे, जब उन्हें मन्अ़ कर दिया गया तो मैं और आप कौन हैं ? हमारे पास कितना इ़ल्म है ? हम सोचते हैं कि "उस की किताब पढ़ लें, उस की तक़रीर सुन लें, उस का क्लिप देख लें, उस के पेज (Page) का जाएज़ा ले लें कि उस ने क्या क्या बोला है," फिर ठक कर के उसे Viral भी कर देते हैं। **अल्लाह** पाक से डरना चाहिये। अभी तो कोई कुछ नहीं बोलता, न ऐसा लगता है कि कुछ हुवा है, लेकिन जब मरने का टाइम आएगा तब पता चलेगा।

शर्ह़ुस्सुदूर में है कि "एक शख़्स की मौत का वक़्त आया, उसे कलिमा तल्क़ीन किया जाता मगर वोह पढ़ नहीं पा रहा था और कह रहा था कि येह आदमी मुझे नज़र आ रहे हैं, येह कहते हैं कि तुझे कलिमा नहीं पढ़ने देंगे, क्यूं कि तू उन लोगों की सोह़बत में रहता था जो ह़ज़रते अबू

बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बुरा भला बोलते थे।" (شرح الصدور، ص38) सोशल मीडिया के येह ग़लत़ मुआ़मलात ईमान की बरबादी और बुरे ख़ातिमे का सबब बन सकते हैं। **अल्लाह** पाक और उस के मह़बूब नाराज़ हो सकते हैं। इस लिये मेह्रबानी कर के सिर्फ़ दा'वते इस्लामी और उ़लमाए अहले सुन्नत के क्लिप देखें और उन्हें ही Viral करें, इस के ज़रीए़ गुनाहों से भी ह़िफ़ाज़त होगी और ईमान भी ताज़ा होगा। अगर आप मेरी बात समझने के बजाए मुझे बुरा भला कहेंगे तो फिर मज़ीद आप की आख़िरत तबाह होगी, क्यूं कि मैं ने कोई ग़लत़ बात नहीं की। अगर आप मेरी बात मान जाएंगे तो मुझे कौन सी जाएदाद या रक़म मिल जाएगी। मैं तो **अल्लाह** पाक और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा चाहता हूं। अगर येह राज़ी हो जाएं तो फिर कोई और राज़ी होता है या नाराज़, मुझे क्या परवाह !! बस रब और उस के मह़बूब राज़ी हो जाएं तो दोनों जहां में बेड़ा पार है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/55)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की नई किताब नमाज़ का त़रीक़ा से "इमाम अह़मद रज़ा ख़ान" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़े वित्र के 14 मदनी फूल

﴿1﴾ नमाज़े वित्र वाजिब है ﴿2﴾ अगर येह छूट जाए तो इस की क़ज़ा लाज़िम है (فتاویٰ ہندیہ، 1/111) ﴿3﴾ वित्र की नमाज़ इ़शा के फ़र्ज़ों के बा'द और सुब्ह़े सादिक़ से पहले पढ़ लेना ज़रूरी है। इ़शा व वित्र का वक़्त एक है, मगर बाहम इन में तरतीब फ़र्ज़ है कि इ़शा से पहले वित्र की

नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं, अलबत्ता भूल कर वित्र पहले पढ़ लिये या बा'द को मा'लूम हुवा कि इ़शा की नमाज़ बे वुज़ू पढ़ी थी और वित्र वुज़ू के साथ तो वित्र हो गए। (فتاویٰ ہندیہ، 1/51، बहारे शरीअ़त, 1/451, हिस्सा : 3) ﴾4﴿ जिसे आख़िरे शब में जागने पर ए'तिमाद हो तो बेहतर येह है कि पिछली रात (या'नी रात के आख़िरी छटे हिस्से) में वित्र पढ़े, वरना बा'दे इ़शा पढ़ ले। (बहारे शरीअ़त, 1/658, हिस्सा : 4) ﴾5﴿ वित्र की तीन रक्अ़तें हैं (درمختار، 2/532) ﴾6﴿ इस में क़ा'दए ऊला वाजिब है, सिर्फ़ तशह्हुद पढ़ कर खड़े हो जाइये।

﴾7﴿ तीसरी रक्अ़त में क़िराअत के बा'द तक्बीरे क़ुनूत (اَللّٰہُ اَکْبَر) कहना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, 1/521, हिस्सा : 3) ﴾8﴿ जिस त़रह़ तक्बीरे तह़रीमा कहते हैं इसी त़रह़ पहले हाथ कानों तक उठाइये फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहिये ﴾9﴿ फिर हाथ बांध कर दुआ़ए क़ुनूत पढ़िये।

दुआ़ए क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ، وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ، وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ، وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ، وَ نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ، اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ، وَ اِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ، وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ، اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ۔

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं

करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी ना फ़रमानी करे। ऐ **अल्लाह**! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी इताअ़त की त़रफ़ दौड़ते और जल्दी करते हैं और तेरी रह़मत के उम्मीद वार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है।

﴾10﴿ दुआ़ए क़ुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।

(बहारे शरीअ़त, 1/655, ह़िस्सा : 4)

﴾11﴿ जो दुआ़ए क़ुनूत न पढ़ सकें वोह येह पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

(ऐ **अल्लाह**!) ऐ रब हमारे! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

या तीन बार येह पढ़ें : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ या'नी ऐ **अल्लाह** मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे (غنیہ، ص418) ﴾12﴿ अगर दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना भूल गए और रुकूअ़ में चले गए तो वापस न लौटिये बल्कि "सज्दए सह्व" कर लीजिये। (فتاویٰ ہندیہ، 1/111) ﴾13﴿ वित्र जमाअ़त से पढ़ी जा रही हो (जैसा कि रमज़ानुल मुबारक में पढ़ते हैं) और मुक़्तदी क़ुनूत से फ़ारिग़ न हुवा था कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी भी रुकूअ़ में चला जाए। (فتاویٰ ہندیہ، 1/111) ﴾14﴿ मस्बूक़ (जिस को पूरी जमाअ़त न मिली वोह) इमाम के साथ क़ुनूत पढ़े (तो) बा'द को न पढ़े और अगर (कोई शख़्स) इमाम के साथ तीसरी रक्अ़त के रुकूअ़ में मिला है तो बा'द को जो पढ़ेगा उस में क़ुनूत न पढ़े। (فتاویٰ ہندیہ، 1/111)

वित्र का सलाम फेरने के बा'द की एक सुन्नत

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब वित्र में सलाम फेरते, तीन बार سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْس कहते और तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से कहते। (نسائی، ص299، حدیث:1729) (नमाज़ का त़रीक़ा, स. 77, 79)

वित्र की जमाअ़त

रमज़ान शरीफ़ में वित्र जमाअ़त के साथ पढ़ना अफ़्ज़ल है ख़्वाह उसी इमाम के पीछे जिस के पीछे इ़शा व तरावीह़ पढ़ी या दूसरे के पीछे। (درمختار مع ردالمحتار، 2/606)

जन्नती फूल (वाक़िआ़)

ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इब्ने सौबान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने एक भाई से वा'दा किया कि रात को खाना उन के पास खाएंगे लेकिन किसी सबब से तशरीफ़ न ला सके ह़त्ता कि सुब्ह़ हो गई। अगले दिन जब उन से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने कहा : "आप ने मुझ से वा'दा फ़रमाया था कि रात को खाना मेरे पास खाएंगे फिर वा'दा ख़िलाफ़ी क्यूं की ?" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर मेरा तुम से वा'दा न होता तो मैं तुम्हें कभी भी न बताता कि मुझे तुम्हारे पास आने से किस चीज़ ने रोका ! जब मैं ने इ़शा की नमाज़ पढ़ी तो सोचा कि तुम्हारे पास आने से पहले वित्र पढ़ लूं कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए। चुनान्चे, जब मैं दुआ़ए क़ुनूत

पढ़ने लगा तो मेरे सामने एक सब्ज़ बाग़ीचा लाया गया जिस में त़रह़ त़रह़ के जन्नती फूल थे, मैं उसे देखता रहा ह़त्ता कि सुब्ह़ हो गई।"

(احیاء العلوم، 1/382)

नमाज़े वित्र के फ़ज़ाइल

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिसे येह ख़ौफ़ हो कि रात के आख़िरी पहर बेदार न हो सकेगा, उसे चाहिये कि वोह सोने से क़ब्ल ही वित्र अदा कर लिया करे और जिसे येह ख़ौफ़ न हो तो उसे चाहिये कि रात के आख़िरी पहर वित्र अदा किया करे क्यूं कि रात के आख़िरी पहर की नमाज़ में दिन और रात के मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) ह़ाज़िर होते हैं।"

(مسلم، حدیث:1766، ص396)

ह़ज़रते ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** पाक ने तुम्हारी मदद एक ऐसी नमाज़ के ज़रीए से फ़रमाई है जो तुम्हारे ह़क़ में सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है और येह नमाज़े वित्र है और इसे तुम्हारे लिये इशा से तुलूए फ़ज्र के दरमियान रखा है।"

(ابوداود، 2/88، حدیث:1418)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

फ़रमाने आख़िरी नबी ﷺ

जो ईमान के साथ सवाब की नियत से शबे क़द्र का क़ियाम करेगा उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाऐंगे।

(بخاری، 1/660، حدیث:2014)